











# वायु प्रदूषण की घुनौती

वस ता हवा म प्रदूषक का मात्रा का 50 अंक से ऊपर जाना हा हानिकारक होता है, लेकिन यह 300 से ऊपर पहुंच जाए, तो फिर सांस लेना भी खतरनाक हो जाता है। दिल्ली में हर साल यह मात्रा 300 से ऊपर पहुंचती है दिल्ली और आसपास के इलाकों को इस वर्ष अब तक राहत महसूस हो रही थी। इस साल थोड़े-थोड़े अंतराल पर पर्याप्त बारिश होती रही, जिससे कई वर्षों से चली आरही वायु प्रदूषण की समस्या यहां के लोगों को नहीं झेलनी पड़ी। लेकिन अक्टूबर आते ही फिर से वायु प्रदूषित होने की खबरें आने लगीं। यह चिंता इस हफ्ते सुप्रीम कोर्ट तक पहुंची है। तो न्यायालय ने वायु प्रदूषण प्रबंधन अधियोग से हवा साफ रखने के लिए उठाए गए कदमों पर जवाब मांगा है। कोट ने पराली जलाने और अन्य कारणों से होने वाले प्रदूषण के बारे में न्यायिक के रूप में सुप्रीम कोर्ट की सहायता कर रही विरष्ट वकील अपरजिता सिंह की दिलालों के सुना। कोट को बताया गया कि ठंड की शुरूआत और दीवाली आने के साथ ही वायु प्रदूषण की समस्या और बढ़े वाली है। इसके संकेत पहले से मिल रहे हैं। इस बीच दिल्ली सरकार ने शीतकालीन कार्ययोजना के तहत सात अक्टूबर से सात नवंबर तक एंटी डस्ट कैपेन की शुरूआत की है बहरहाल, पराली जलाने की समस्या का कोई समाधान अभी पाया नहीं है। खेतों से फसल काट लेने के बाद पराली को जलाना पंजाब और हरियाणा सहित कई दूसरे राज्यों में भी आम बात है। इसके द्वारा आंदोर-दूर तक फैलता है। इसके अलावा बिना पूरे एहतियाती उपाय नियमण कर्ता जारी रखने के कारण हवा में धूल मिलती है। ऊपर से ठंड के कारण धूंध उन पर आ बैठती है। नियमण के कारण उड़े वाली धूल, गड़ियों से निकला धूआं और खेतों में पराली जलाने से उता धूआं स्पॉग्ग की चादर निर्मित करते हैं। धूंध, धूएं और धूल से मिल कर ठंडी वाया भारी हो जाती है और आसपास पर स्पॉग छा जाता है। वैसे तो हवा में प्रदूषकों की मात्रा का 50 अंक से ऊपर जाना ही हानिकारक होता है, लेकिन यह 300 से ऊपर पहुंच जाए, तो फिर सांस लेना भी खतरनाक हो जाता है। दिल्ली में हर साल यह मात्रा 300 से ऊपर पहुंचती है। विशेषज्ञों के मुताबिक इस कारण तरह-तरह की बीमारियां पनप रही हैं। इसलिए वायु प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट की चिंता बाजिब है।

# ਗੁਣਾ: ਦੁਖ ਏਫ ਪਹਣ੍ਹ ਅਨਕ

## ਤਨਵੀਰ ਜਾਫਰੀ

## फिलिस्तीन के ल

अकल्पनीय वर्षा की है उसके फौरन बाद से ही इस्लाइल ने भी युद्ध की घोषणा करते हुये जगा पर ताबड़ोड़ हमले शुरू कर दिये हैं। दोनों ही तरफ से मानवता का खून खुलकर बहाया जा रहा है। दोनों ही पक्षों के हजारों लोग अपनी जानें गँवा चुके हैं। अमेरिका सहित कई पश्चिमी देश हमास के हमले को आतंकवादी हमला बताते हुये इस्लाइल के साथ खड़े हुए हैं। जबकि इस्लामी देश खासकर अरब जगत् इस मुद्दे पर बंटा हुआ है। ले दे कर ईरान, सीरिया व लेबनान जैसे देश व वहां का नेतृत्व बिना इस बात की परवाह किये हुये फिलिस्तीनियों के साथ खड़ा है कि इस्लाइल को महाशक्ति अमेरिकी समर्थन हासिल है। इस्लाइल तो यह भी आरोप लगा रहा है कि हमास द्वारा इजराइल पर दार्दी गयी लगभग 7 हजार मिसाइल व इसके कारण इस्लाइल में हुई जान व माल की भारी तबाही के पीछे ईरान का हाथ है। परन्तु ईरान ने इस हमले में अपनी सालितात से तो इंकार जरूर किया है परन्तु उसने हमास और फिलिस्तीनियों के अधिकारों व उनके संघर्ष के प्रति अपना खुला समर्थन पूर्ववत् जारी रखने का एलान भी किया है। हमास का मत है कि फिलिस्तीन एक इस्लामी मातृभूमि है जिसे किसी अन्य को नहीं सौंपा जा सकता और इजराइल से फिलिस्तीन का नियंत्रण छीनने के लिए पवित्र युद्ध छेड़ना फिलिस्तीनी मुसलमानों के लिए एक धर्मिक कर्तव्य है। वेस्ट बैंक में भी हमास की मौजूदगी है। फिलहाल खंडहर के रूप में परिवर्तित हो चुके गजा को इस्लाइली सेना चारों तरफ से धेर कर सैन्य कार्रवाही कर रही है यहाँ तक कि उसने हवाई हमले भी किये हैं। इस्लाइल ने तो फिलिस्तीनियों से गजा छोड़ कर चले जाने की भी वेतावती दे डाली है। गौरतलब है की हमास का मुख्यालय भी गजा शहर में ही है जिसे पूरी तरह ध्वस्त करने का संकल्प इस्लाइली नेता बेंजपिन ने निरन्याहु ले चुके हैं।

इस पूरे दुर्भाग्यपूर्ण घटना चक्र में केवल मानवता विरोधी युद्ध ही नहीं हो रहा बल्कि पूरा विश्व इस युद्ध के इसके कारणों के विभिन्न पहलुओं को लेकर भी चिंतित है। सबसे बड़ी चिंता इस युद्ध में यह है कि जिस तरह आनन्द फानन में अमेरिका ने अपनी सैन्य सहायता इस्ताईल को सबसे फानल भेजी और उसके वरिष्ठ मंत्री भी इस्ताईल आये और गये उससे एक बात साफ नजर आ रही है कि इस्ताईल इस समय यह लड़ाई के बावजूद इसके पीछे ईरान को उकसाने की भी पश्चिमी देशों की एक बड़ी साजिश है। तभाम अंतर्राष्ट्रीय प्रतिवर्ती विद्युत के बावजूद ईरान को प्रगति के पथ पर निरंतर अपेक्षित रहना और पूरी तरह आत्म निर्भर बने रहना यहाँ तक कि सैन्य, विज्ञान व तकनीकी क्षेत्रों में भी शोधात्मक प्रगति करना पश्चिमी देशों को नहीं भा रहा है। यह किसी भी तरह ईरान को युद्ध में खींचना चाहते हैं। वर्तमान गजा युद्ध में भी इन देशों की यही कोशिश है कि गजा पर हो रहे इस्ताईली जुलम और उसे अमेरिकी समर्थन से क्रोधित होकर किसी तरह ईरान भी युद्ध में कूद पड़े। यदि ऐसा होता है तो उसके बावजूद इस युद्ध की तरफ शक्ति दोषी समूहों के कल्पना भी नहीं की जा सकती।

दोसरा पहलू इस युद्ध का यह भी है कि इसाईल व अमेरिका सहित अनेक पश्चिमी देश जैक स्वयं शरू़ों का उत्पादन व व्यवसाय करते हुए उनके लिये इस तरह के युद्ध ही उचित बाजार हैं। लिहाजा हथियार उत्पादक करने व मुख्यतः इसका व्यवसाय करने वाले देशों की दिलचस्पी शर्ति या युद्ध रकने में नहीं बल्कि युद्ध को और खतरनाक मोड़ तक ले जाने में रहती है। भीषण मात्रक हथियारों के इस्तेमाल के परिणाम स्वरूप जहाँ मानवता का रक्षणीय है और मानवतावादी अंसू बहाते हैं वही यह हथियार उत्पादक वैश्विक लॉटीं ऐसे हथियारों के अति धारक परिणाम से आगे जा सकती है। अपने उत्पादनी पार्टनर्स पर ले जाएं। 24x7 ऑफलाइन ऐसे पार्टनर्स

का अपना व अपन उत्पाद का सफलता मानत ह। आजकल एस प्रत्यक्ष हथियारों के प्रयोग के साथ ही उनकी वीडिओ भी बनाई जाती है ताकि उसकी कार्यक्षमता व उसके द्वारा की गयी भीषण तबाही का पूरा खुनौती मंजर कैमरे में कैद कर अपना शस्त्र क्रेता ग्राहक देशों या आंकवादी संगठनों को दिखाया जा सके। दुनिया के कई शस्त्र उत्पादक देश के बीच अनेक देशों की सरकारों को उसके सैन्य प्रयोग के लिये ही हथियार नहीं बेचते बल्कि दुनिया के अनेक आंतंकी संगठनों या कथित रूप से मुक्ति संघर्ष में लगे संगठनों को भी हथियार की आपूर्ति करते हैं। अन्यथा सोचिये कि दुनिया के तमाम आंतंकी या मुक्ति संग्राम/आंदेलन के नाम पर भूमिगत हाकर गुरुल्लायुद्ध करने वाले संगठनों के पास अत्याधुनिक हथियार आने का आखिर दूसरा कौन सा जरिया है?

इसी इश्वाइल-गजा संघर्ष के बीच दुनिया के सामने वह दस्तावेज भी खूब बायरल हो रहे हैं जिसमें जर्मनी में हिटलर से सताये गये यहूदी जहाजों में भरकर फिलिस्तीन में शरण मांग रहे हैं और फिलिस्तीनी समुद्र तट पर लगे अपने जहाज पर उन्होंने एक बैनर लगा रखा है जिसपर शरण की भीषण मांगते हुये यह लिखा कि - जर्मनी ने हमारे घर परिवार को तबाह बर्बाद कर दिया है अब आप हमारी उमीदों को मत कुचलना। गैर तलब है कि 1941-45 के मध्य जर्मन तानाशाह हिटलर ने लगभग 60 लाख यहूदियों को तरह तरह की यातनायें देकर मार दिया था। यह जर्मनी में कुल यहूदियों की आबादी का लगभग एक तिहाई हिस्सा था। कहा जाता है कि बैच यहूदियों को देश से बाहर निकालते समय भी हिटलर ने कहा था कि - मैं चाहता तो इन्हें भी मार देता। मगर मैंने इन्हें जिंदा इसलिये छोड़ दिया ताकि दुनिया देखे कि मैंने इन्हें क्यों मारा। परन्तु उस घटना के लिये जोकि द्वितीय विश्व युद्ध का एक हिस्सा थी आज तक दुनिया हिटलर को अपराधी समझती है और यहूदियों के साथ उस समय हुये हालोकास्ट के चलते इस समुदाय के प्रति अपनी सहानुभूति रखती है। परन्तु केवल आठ दशकों के अपने शरणार्थी रूपी प्रवास के दौरान जिस तरह यहूदियों ने फिलिस्तीनी की जमीन पर कब्जा करने व इन्हें इनकी जमीन से बेदखल करने तक का षड्यंत्र पश्चिमी देशों की मिली जुली साजिश से रचा है और अब आपे दिन उस धरती पर खून की होली खेली जाती है उसे देखकर यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि भविष्य में किसी देश के सताये हुये लोग या असुरक्षा, हिंसा, प्रताड़ना या विद्वेष के शिकार वर्ग या समुदाय विशेष के लिए यदि किसी देश में शरण मांगें तो उस देश को पूरा अधिकर है कि वह फिलिस्तीन के साथ हुये दुनिया के सबसे बड़े धोखे को मद्देनजर रखते हुये ही कोई निर्णय ले ? अब रहा सबाल भारत सहित कई देशों याहाँ तक कि मुस्लिम जगत के कई देशों द्वारा इजरायल को समर्थन देने या उसका विरोध न करने का, तो इसके लिये इश्वाइल ने एक दूरगामी रणनीति के तहत पछले तीन दशकों से उन देशों से निकटता बढ़ाई जो इजराइल से

# विचारमंथन

राजस्थान में भाजपा को कांग्रेस से ज्यादा अपने लोगों की चुनौतियों से जूझना पड़ रहा है

भाजपा न अगरा तक मध्य प्रदेश में 136 साठा पर छत्तीसगढ़ में 84 साठा पर व राजस्थान में 41 साठा पर प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर कागेस पर बहुत तो बना ली है। मगर भाजपा की सूची में बहुत से जौगदा विधायिकों व पूर्व नें प्रत्याशी रहे नेताओं के नाम काट दिए जाने से पार्टी में विरोध की स्थिति उत्पन्न हो रही है। विभिन्न चुनावी छोर्सियों द्वारा किये गए सर्वे के आधार पर भाजपा ने पार्टी विरोधी लहर को रोकने के लिए बहुत-सी सीटों पर प्रत्याशियों में फेरबदल किया है। भाजपा द्वारा राजस्थान में 6 लोकसभा व एक राज्यसभा सदस्यों को, मध्य प्रदेश में तीन केंद्रीय मन्त्रियों सहित सात लोकसभा सदस्यों के साथ पार्टी के राष्ट्रीय महानंगी कैलाश विजयरावीया को मैदान में उतारा गया है। इसी तरह छत्तीसगढ़ में केंद्रीय मंत्री ऐपुका सिंह सहित चार सांसदों को चुनाव मैदान में उतार गया है। हालाकि भाजपा ने केंद्रीय मन्त्रियों व सांसदों को उन्हीं सीटों पर मैदान में उतारा है जहाँ पार्टी लगातार चुनाव हार रही है। मगर सांसदों को विधानसभा चुनाव में टिकट देने से उस क्षेत्र में विरोध की स्थिति पैदा हो गई है। कई क्षेत्रों में प्रत्याशी पिछले पांच साल से चुनाव की तैयारी कर रहे थे। वहाँ सांसदों को टिकट देने से उनमें नाराजगी व्याप लो रही है। राजस्थान के जयपुर में विद्याधर नगर सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री मौरोसिंह शेखावत के दामाद नरपति सिंह राजवी मौजूदा विधायक हैं।



# रमश सराफ धमार वरिष्ठ स्तंभकार

১

अगले विधानसभा चुनाव के टिकटों को लेकर अंदरूनी गुटबाजी सामने आ रही है। आगामी नवंबर महीने में देश के पांच प्रदेशों- मिजोरम, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान व तेलंगाना में विधानसभा के चुनाव होने हैं। भाजपा ने अभी तक मध्य प्रदेश में 136 सीटों पर छत्तीसगढ़ में 84 सीटों पर व राजस्थान में 41 सीटों पर प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर कांग्रेस पर बढ़त तो बना ली है। मगर भाजपा की सूची में बहुत से मौजूदा विधायकों व पूर्व में प्रत्याशी रहे नेताओं के नाम काट दिए जाने से पार्टी में विरोध की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

राजस्थान के जयपुर में विधायक नगर सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत के दामाद नरपति सिंह राजवी मौजूदा विधायक हैं। उन्होंने पिछला विधानसभा चुनाव करीबन 31232 वोटों से जीता था। उनका टिकट कटने से उन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए यहां तक कह दिया कि मेरा टिकट काटकर मुगलों के सामने घुटने टेकने वालों को टिकट देना कहां का इसाफ है। हालाँकि बाद में राजवी अपने बयान से पलट गए। दीया कुमारी अभी राजसमंद से सांसद हैं तथा 2013 में सवाई माधोपुर से विधायक रह चुकी हैं। जयपुर की झोटवड़ा विधानसभा सीट से राजपाल सिंह शेखावत का टिकट काट कर उनके स्थान पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री व जयपुर ग्रामीण सांसद राज्यवर्धन राठौड़ को मैदान में उतारा गया है। टिकट काटने पर राजपाल शेखावत के समर्थकों ने भाजपा मुख्यालय पर जाकर जमकर बवाल मचाया। राजपाल शेखावत कई बार विधायक तथा राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं।

जातीसंकेत के सांसदों को चुनाव मैदान में उतारा गया है। इसी तरह छत्तीसगढ़ में केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह सहित चार सांसदों को चुनाव मैदान में उतर गया है। हालाँकि भाजपा ने केंद्रीय मंत्रियों व सांसदों को उन्हीं सीटों पर मैदान में उतारा है जहां पार्टी लगातार चुनाव हार रही है।

मैं टिकट देने से उस क्षेत्र में विरोध की स्थिति पैदा हो गई है। कई क्षेत्रों में प्रत्याशी पिछले पांच साल से चुनाव की तैयारी कर रहे थे। वहां सांसदों को टिकट देने से उनमें नाराजगी व्याप्त हो रही है।

राजस्थान के जयपुर में विधायक नगर सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत के दामाद नरपति सिंह राजवी मौजूदा विधायक हैं। उन्होंने पिछला विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी रहे विकास चौधरी तो अपने टिकट काटने पर रोने लगे तथा कहा कि पैसों के बल पर टिकट दी गई है। हालाँकि भागीरथ चौधरी 2003 व 2013 में किशनगढ़ से विधायक रह चुके हैं। 2018 में उनका टिकट काट दिया गया था। फिर 2019 को उनको अजमेर से लोकसभा का टिकट दिया गया था और वह चुनाव जीत गए थे। झुंझुनूंके से सांसद नरेंद्र कुमार खींचड़ को मंडावा सीट से प्रत्याशी बनाया गया है। नरेंद्र कुमार मंडावा से चार चुनाव लड़ चुके हैं। जिसमें वह दो बार हारे व दो बार जीते थे। 2018 में उन्होंने भाजपा टिकट पर विधानसभा का चुनाव जीता था। मगर 2019 में उन्होंने सांसद बनने पर विधायक पद से इस्तीफा दे दिया था।

जातीसंकेत से लगातार तीन बार के सांसद देवजी पटेल को सांचौर से बन मंत्री सुखराम बिश्नोई के सामने मैदान में उतारा गया है। सांचौर से भाजपा एक बार 2003 में ही जीत पाई थी। सांचौर से सांसद देवजी पटेल को टिकट मिलने से बचतित टिकट दावेदारों में आक्रोश है। वहां सांसद के काफिले को लोगों ने बीच रस्ते में रोका व काले झांडे दिखाकर उनका विरोध जताया और काफिले के वाहनों पर पथराव किया जिससे दो से प्रदर्शन से घिरे सांसद देवजी पटेल ने जैसे-तैसे अपनी जान बचायी।

राजस्थान में भाजपा के हिन्दुवादी चेहरे अलवर सांसद महंत बालकनाथ को तिजारा से मैदान में उतारा गया है। मध्य प्रदेश में अब तक घोषित 136 प्रत्याशियों में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का नाम भी शामिल है।

छत्तीसगढ़ से केंद्र सरकार में मंत्री रेणुका सिंह को भरतपुर-मोहनहात सीट से, सांसद गोमती सांचौर को प्रत्याशी बनाया। किरोड़ीलाल मीणा 5 बार विधायक, दो बार लोकसभा सदस्य व एक बार राज्यसभा सदस्य तथा राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं। वह एक बार सवाई माधोपुर से विधायक भी रह चुके हैं। राजस्थान में भाजपा ने केन्द्रीय मंत्री कैलाश चौधरी कि अध्यक्षता में एक कमेटी बनायी है जो बागी प्रत्याशियों को समझाकर मनायेगी। इस कमेटी ने अपना काम भी शुरू कर दिया है। भाजपा के कई बड़े नेता अलग-अलग जिलों में जाकर पार्टी कार्यक्रमों से मिलकर उन्हें समझा रहे हैं।

मध्य प्रदेश में केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर को दिमानी, प्रहलाद सिंह पटेल को नरसिंहपुरी, फगन सिंह कुलस्ते को निवास विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याशी बनाया गया है। वहां लोकसभा सांसद राकेश सिंह को जबलपुर पश्चिम, गणेश सिंह को सतना, प्रीति पाठक को सीधी और केप्रत्याशियों से पहले अपनी ही पार्टी पाना होगा। इनमें बड़ा नाम तिजारा से बाबा बालकनाथ, किशनगढ़ से भागीरथ चौधरी, सांचौर से देवजी पटेल हैं जो अपनों से ही घिर रहे हैं। बीजपी मुख्यालय पर राज्यवर्धन गो बैक और विजय बैंसला के लिए बाहरी भगाओ देवली-उनियारा बचाओ के नारे लगे हैं। चुनाव में दीया कुमारी को छोड़कर अन्य सांसदों का कड़ा इमिटहान है। श्रीगंगानर, बांदीकुई, झुंझुनूंके टोटपूतली, बानसपुर, सुजानगढ़ समेत 10 सीटों पर ऐसे प्रत्याशी हैं जिन्होंने भाजपा के खिलाफ चुनाव लड़ा था। गुर्जर नेता कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के बेटे विजय बैंसला को देवली-उनियारा से कड़ी चुनौती मिल सकती है। उन्हें बाहरी बताकर विरोध शुरू हो गया है। भाजपा में कुछ दिनों पूर्व ही घर बापसी करने वाले सुभाष महरिया को सीकर के लक्ष्मणगढ़ में कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के सामने उतारा गया है। सहाड़ा से भाजपा प्रत्याशी लादूलाल पीतलिया के सामने कौन लड़ेगा यह तय नहीं है। हालाँकि उपचुनाव में उन्होंने जो विरोध किया वह याद दिलया जा रहा है। उन्होंने अमित शाह के नाम से धमकाने का आरोप लगाया था और कांग्रेस सरकार ने तो पुलिस सुरक्षा उपलब्ध कराई थी। ये बातें अब पार्टी के अंदर और विधानसभा क्षेत्र में मुझ बन रही हैं।

इस बात का उल्लेख देखने को मिलता है। नई दिल्ली के द्वारका स्थित नव निर्मित इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एण्ड एक्सपो सेन्टर रयशोभुमि जी-20 के संसदीय पीठासीन अधिकारियों के दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित की गई। इस सम्मेलन में दुनियाभर के जी-20 सदस्य देशों के संसदों के अध्यक्षों ने हिस्सा लिया। दो दिनों तक चले इस सम्मेलन में चार सत्र आयोजित किए गए थे। इस सम्मेलन का थीम एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के लिए संसद है। सम्मेलन के समाप्ति सत्र में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा, कई देशों के प्रतिनिधियों ने पश्चिम एशिया और मध्य पूर्व की स्थिति का भी उल्लेख किया है। कुछ सदस्यों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने और सप्लाई चेन में लचीलापन लाने के आवश्यकता का भी उल्लेख किया है। आज के इंटर कनेक्टेड विश्व में हम किसी मुद्दे को आइसोलेशन में नहीं देख सकते। 13 अक्टूबर को नई दिल्ली के द्वारका स्थित नव निर्मित इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एण्ड एक्सपो सेन्टर ह्याशोभुमि ह्याजी 20 के संसदीय पीठासीन अधिकारियों के दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन प्रधान मंत्री द्वारा की गई। प्रधान मंत्री ने संसदीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन-पी 20 को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि खंडित विश्वा कभी भी वर्तमान चुनौतियों का समाधान नहीं कर सकता।



इस बात का उल्लेख देखने को मिलता है। नई दिल्ली के द्वारका स्थित नव निर्मित इंडिया इंटरनेशनल कन्फ्रेंशन एण्ड एक्सपो सेन्टर यशोभुमि जी-२० के संसदीय पीठासीन अधिकारियों के दो दिवसीय सम्मेलन

आयोजित को गई। इस सम्मेलन में दुनियाभर के जो-20 सदस्य दशा के सदस्यों के अध्यक्षों ने हिस्सा लिया। दो दिनों तक चले इस सम्मेलन में चार सत्र आयोजित किए गए थे। इस सम्मेलन का थीम एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के लिए संसद है। सम्मेलन के समाप्ति सत्र में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा, कई देशों के प्रतिनिधियों ने पश्चिम एशिया और मध्य पूर्व की स्थिति का भी उल्लेख किया है। कुछ सदस्यों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने और सप्लाई चेन में लचीलापन लाने के आवश्यकता का भी उल्लेख किया है। आज के इंटरकनेक्टेड विश्व में हम किसी मुद्दे को आइसोलेशन में नहीं देख सकते। 13 अगस्त बुराको नई दिल्ली के द्वारका स्थित नव निर्मित इंडिया इंटरनेशनल कन्वेशन एण्ड एक्सपो सेन्टर हायशोभुमि हाजी 20 के संसदीय पीटासीन अधिकारियों के दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन प्रधान मंत्री द्वारा की गई। प्रधान मंत्री ने संसदीय पीटासीन अधिकारियों के सम्मेलन-पी 20 को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि खंडित विश्वा कभी भी वर्तमान चुनौतियों का समाधान नहीं कर सकता।



लेखक स्वतंत्र पत्रकार व स्त

बाला है। अमृत के दंत को बोहोद विश्व में

से कांग्रेस और राहुल गांधी का आक्रामक स्वरूप देखने को मिल रहा है। जब भारत जोड़ो यात्रा शुरू हुई थी। तब उन्हें पूपू कहा जा रहा था। मीडिया में यह भी कहा जा रहा था, कि वह जल्द ही यात्रा बीच में छोड़ दिया गया।

Digitized by srujanika@gmail.com

के ऊपर जो निशान साथा था। वह कोई काम नहीं आया। उल्टे कर्नाटक में इस दलित नेता के कारण भारतीय जनता पार्टी को करारी पराजय का समान करना पड़ा। भाजपा के हमले से कांग्रेस में एक दलित नेता जल्द पैदा हो गया। जो राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। पिछले कुछ महीनों में कांग्रेस ने जिस तरह से लोक लुभावन घोषणाएं कर भारतीय जनता पार्टी को धेरने का काम किया है उससे भी भारतीय जनता पार्टी, धेर-धेर कांग्रेस के बिछाए हुए जाल में फंसती हुई नजर आ रही है। केंद्र सरकार ने रसई गैस के दाम बढ़ाए थे। कांग्रेस ने कर्नाटक चुनाव में 500 रुपये में गैस सिलेंडर देने का वादा किया। कांग्रेस ने जिस तरह से कर्नाटक में लडाई लड़ी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और अमित शाह के हाते हुए भी कर्नाटक विधानसभा चुनाव में भाजपा की करारी पराजय हुई। केंद्र सरकार को 300 रुपये रसई गैस के दाम घटाने मजबूर होना पड़ा। मध्य प्रदेश में कमलनाथ ने महिलाओं को 1500 रुपये देने का वचन दिया था। मध्य प्रदेश सरकार ने ताबड़तोड़ 1000 रुपये की योजना शुरू करके तथा हर महीने रुपये 250 बढ़ाकर, नवंबर माह तक 1500 रुपये महिलाओं को देने का निर्णय लेना पड़ा। इस तरह के निर्णय का उल्लेख संपादकीय में इसलिए करना पड़ रहा है, कि जनता के पास एक सदैश भी जा रहा है। विपक्ष उनकी मांग को उठाता है, तो सरकार उनकी मांग को मान लेती है। विपक्ष यदि मजबूत नहीं होगा, तो सरकार उनकी बात नहीं मानेगी। ओल्ड पेंशन स्कीम को लेकर भी कांग्रेस ने लीड ली है। हिमाचल और कर्नाटक विधानसभा का चुनाव ओल्ड पेंशन स्कीम के कारण कांग्रेस ने जीत लिया। सरकारी कर्मचारियों में यह भरोसा बनने लगा कि यदि कांग्रेस की सरकार आई, तो ओल्ड पेंशन स्कीम लागू हो जाएगी। हाल ही में पियंका गांधी ने चुनावी सभा में स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को 1 से लेकर 12 वाँ तक के बच्चों को निशुल्क शिक्षा देने और हर माह स्कॉलरशिप देने की घोषणा की है। इसका भी बड़ा असर आम जनता पड़ता हुआ दिख रहा है। 70 से 80 फीसदी आबादी के बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं। सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को कोई फीस नहीं लगेगी। उल्टे उन्हें हर माह स्कॉलरशिप प्राप्ति मिलेगी। इससे निम्न वर्ग, निम्न मध्यम आय वर्ग और मध्यम वर्ग के लोग पियंका गांधी की इस घोषणा से प्रभावित हो जाएंगे। पियंका गांधी ने जिस तरह से निशुल्क शिक्षा और स्कॉलरशिप का तीव्र झोड़ा है, वह टीक निशाने पर लगा है। एक ही झटके में पियंका गांधी की निम्न एवं मध्यम वर्ग की आगांओं को जगाने का काम किया है।











